सीबीसीएस (CBCS)
Choice Based Credit System

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय,
कला स्नातक : हिन्दी (सेमेस्टर सिस्टम)

हिन्दी विभाग
स्नातक पाठ्‌यक्रम

शैक्षणिक वर्ष

सेमेस्टर I and II – 2024–25
सेमेस्टर III and IV –2025–26
सेमेस्टर V and VI –2026–27

अध्ययन एवं परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम योजना

प्रस्तावना

पाठ्यक्रम सुधारों में वांछित शिक्षण परिणामों को महत्त्वपूर्ण मानते हुए, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 और उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए यूजीसी गुणवत्ता अध्यादेश के अनुरूप स्नातकोत्तर और स्नातक कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम को संशोधित करने का प्रयास किया गया है। पाठ्यक्रम को संशोधित करने की प्रक्रिया एनईपी लागू करने के लिए व्यापक रोडमैप को अपनाने के साथ शुरू की जा सकती है। रोडमैप में नीति की प्रमुख विशेषताओं की पहचान की गई है और प्रमुख शैक्षणिक सुधारों के लिए अच्छी तरह से परिभाषित जिम्मेदारियों और तय समय के साथ कार्य योजना को स्पष्ट किया गया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने उच्च शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को बढ़ाने और पूरे भारत में उच्च शिक्षण संस्थानों (एचआईआई) में न्यूनतम मानकों को लागू करने के इरादे से समय के साथ कईं नियम और निर्देश तैयार किए हैं। यूजीसी द्वारा सुझाए गए हाल के शैक्षणिक सुधारों ने उच्च शिक्षा प्रणाली के व्यापक संवर्धन में योगदान दिया है।

एनईपी–2020 की पृष्ठभूमि में, संशोधित पाठ्यक्रम नीति की भावना को स्पष्ट करते हुए निम्नलिखित बिन्दुओं पर जोर है– सीखने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण, नवीन शिक्षण और मूल्यांकन रणनीतियाँ; बहु–विषयक और अंतर–विषयक शिक्षा, रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच; मूल्य–आधारित पाठ्यक्रमों के माध्यम से नैतिक और संवैधानिक मूल्य, जीवन कौशल, उद्यमशीलता और पेशेवर कौशल के माध्यम से विभिन्न विषयों में 21वीं सदी की क्षमताएँ; सामुदायिक और रचनात्मक सार्वजनिक जुड़ाव, सामाजिक, नैतिक और पर्यावरण जागरूकता, *भारतीय ज्ञान परम्परा* जैसे प्रासंगिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा, सांस्कृतिक परंपराओं और शास्त्रीय साहित्य से परिचय; सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों के साथ भारतबोध और आधुनिक शिक्षाशास्त्र का समन्वय, पाठ्यक्रम विकल्पों में लचीलापन, छात्र–केंद्रित भागीदारी, सीखना : अध्ययन के लिए विषयों के रचनात्मक संयोजन को सक्षम करने के लिए कल्पनाशील और लचीली पाठ्यक्रम संरचना, तकनीकी, व्यावसायिक और विज्ञान कार्यक्रमों के लिए उद्योग और उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच घनिष्ठ सहयोग और प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए निर्दिष्ट सीखने के परिणामों, क्षमताओं और स्वभाव के साथ संरेखित किए जाने वाले प्रारंभिक मूल्यांकन उपकरण।

विश्वविद्यालय ने प्रत्येक कार्यक्रम के लिए ऑनलाइन शिक्षण और आमने–सामने कक्षाओं के घटक के साथ मिश्रित शिक्षा को अपनाने पर भी आम सहमति विकसित की है।

विकल्प आधारित क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस)

विकल्प आधारित क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस), शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक विश्वविद्यालय संस्थान से दूसरे विश्वविद्यालय संस्थान में छात्रों के स्थानांतरण की सुविधा के लिए शैक्षणिक सुधार प्रक्रिया का एक हिस्सा है, जो शिक्षकों को अपना पाठ्यक्रम तैयार करने और उन्हें शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में नवाचारों को प्रस्तुत करने और उच्च शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को उन्नत करने में सक्षम बनाने के लिए पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान करता है। सीबीसीएस एक कैफेटेरिया प्रकार का दृष्टिकोण प्रदान करता है जिसमें छात्र अपनी पसंद के पाठ्यक्रम ले सकते हैं, अपनी गति से सीख सकते हैं, अतिरिक्त पाठ्यक्रम कर सकते हैं और आवश्यक क्रेडिट से अधिक प्राप्त कर सकते हैं, और सीखने के लिए एक अन्तर–अनुशासनीय दृष्टिकोण अपना सकते हैं। ग्रेडिंग प्रणाली को व्यापक रूप से पारंपरिक अंक प्रणाली के बरअक्स एक सुधार के रूप में माना जाता है, यही वजह है कि भारत सहित विदेशों के अग्रणी संस्थानों ने इसे अपनाया है। इस प्रकार यह सुसंगत ग्रेडिंग प्रणाली स्थापित करने के लिए एक मजबूत तर्क है। यह देश और विदेश के संस्थानों के बीच छात्रों की निर्बाध गतिशीलता को सुविधाजनक बनाएगा, साथ ही संभावित नियोक्ताओं को छात्रों के प्रदर्शन का सही आकलन करने की समझ देगा। ग्रेडिंग प्रणाली में वांछित मानकीकरण और छात्रों के परीक्षा परिणामों के आधार पर संचयी ग्रेड प्वाइंट औसत (सीजीपीए) की गणना हेतु, यूजीसी ने व्यापक दिशानिर्देश भी तैयार किए हैं।

Distribution of Credits (UG Programme)										
SEMESTER-I										
Paper Code	**Paper Name**	**Code**	**L**	**T**	**P**	**Total Credits**	**Maximum Marks**			****Minimum Passing Marks (%)**
							Internal Marks	External Marks	**Total marks**	
---4.5AECT11	Environment Studies	**AEC**	**2**	**0**	**0**	**2**	-	50	50	**36**
HIN 4.5 DCC 12	प्राचीन काव्य (आदिकाल एवं निर्गुण भक्तिकाव्य)	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36
SEMESTER II										
---4.5AECT21	General English or Hindi	AEC	2	0	0	2	-	50	50	36
HIN 4.5 DCCT 22	मध्यकालीन काव्य (सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकाल)	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36
SEMESTER III										
---5SDCT31	Elementary Computer	SDC	2	0	0	2	-	50	50	36
HIN. 5 SDCT 32	आधुनिक काव्य	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36
SEMESTER IV										
---5VACT41	Indian Knowledge System	VAC	2	0	0	2	50	-	50	36
HIN. 5 VACT 42	उपन्यास साहित्य	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36
SEMESTER V										
--5.5SDCT51	Communication Skills	SDC	2	0	0	2	50	---	50	36
HIND. 5.5 DCCT 52	नाटक एवं कथेतर साहित्य	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36
SEMESTER VI										
-- -5.5SECT61	Special Elective Courses like DPR, IOJ, CEE, RCC	SEC	2	0	0	2	50	-	50	36
Dissertation/Project/Field Study (DPR), Internship or On-Job Experience (IOJ) or Community Engagement Experience (CEE), Research Credit Courses (RCC). # Pass/Fail/Credits would be submitted by the college concerned similar to practical/dissertation										
HIN 5.5 SECT 62	कहानी साहित्य	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36

अंक योजना : नियमित विद्यार्थी

150 अंकों की योजना होगी। योजना इस प्रकार से है –

आंतरिक मूल्यांकन	लिखित	योग
30	120	150

परीक्षा योजना की रूपरेखा

1. एक पाठ्यक्रम में 5 इकाइयाँ होंगी। प्रश्न पत्र में तीन खण्ड होंगे। खण्ड–ए (20 अंक) में 10 प्रश्न होंगे जिनमें प्रत्येक इकाई में से दो प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं. खण्ड–ए इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि 1 से 5 तक के प्रश्न बहुविकल्पीय प्रश्न हों, जबकि 6 से 10 तक के प्रश्न रिक्त स्थान भरने वाले प्रश्न हों। इस खण्ड के उत्तर 50 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

2. खण्ड–बी (40 अंक) में पाँच प्रश्न होंगे (आंतरिक विकल्प के साथ प्रत्येक इकाई से दो)। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का होगा। परीक्षार्थी को सभी पाँच प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है। इस खण्ड के उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।`

3. खण्ड–सी (60 अंक) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा। परीक्षार्थी को उपलब्ध पाँच प्रष्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का चयन कर उत्तर देना होगा। इस खण्ड के उत्तर 500 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

अंक योजना : स्वयंपाठी विद्यार्थी

150 अंकों की योजना होगी। योजना इस प्रकार से है –

आंतरिक मूल्यांकन	लिखित	योग
30	120	150

परीक्षा योजना की रूपरेखा

1. एक पाठ्यक्रम में 5 इकाइयाँ होंगी। प्रश्न पत्र में तीन खण्ड होंगे। खण्ड–ए (20 अंक) में 10 प्रश्न होंगे जिनमें प्रत्येक इकाई में से दो प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं. खण्ड–ए इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि 1 से 5 तक के प्रश्न बहुविकल्पीय प्रश्न हों, जबकि 6 से 10 तक के प्रश्न रिक्त स्थान भरने वाले प्रश्न हों। इस खण्ड के उत्तर 50 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

2. खण्ड–बी (55 अंक) में पाँच प्रश्न होंगे (आंतरिक विकल्प के साथ प्रत्येक इकाई से दो)। प्रत्येक प्रश्न 11 अंक का होगा। परीक्षार्थी को सभी पाँच प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है। इस खण्ड के उत्तर 200 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।`

3. खण्ड–सी (75 अंक) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 25 अंक का होगा। परीक्षार्थी को उपलब्ध पाँच प्रष्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का चयन कर उत्तर देना होगा। इस खण्ड के उत्तर 500 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

अस्वीकरण : सीबीसीएस पाठ्यक्रम को अकादमिक परिषद और प्रबंधन बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया गया है। किसी भी जानकारी के लिए कृपया संबंधित संकाय से संपर्क करें।

पाठ्यक्रम संरचना : बी.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर I

Paper Code	Paper Name	Code	L	T	P	Total Credits	Maximum Marks		Total marks	**Minimum Passing Marks (%)
							Internal Marks	External Marks		
---4.5AECT11	Environment Studies	AEC	2	0	0	2	-	50	50	36
HIN 4.5 DCC 12	प्राचीन काव्य (आदिकाल एवं निर्गुण भक्तिकाव्य)	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36

पाठ्यक्रम कोड : 4.5 DCCT 12

पाठ्यक्रम का प्रकार : सेमेस्टर I का अनुशासन विशिष्ट कोर कोर्स I

पाठ्यक्रम का शीर्षक : **प्राचीन काव्य (आदिकाल एवं निर्गुण भक्तिकाव्य)**

पाठ्यक्रम का स्तर : NHEQF Lrj 4-5/5/5-5

पाठ्यक्रम का क्रेडिट : 6

पाठ्यक्रम का वितरण : व्याख्यान 5, टयूटोरियल 1

सेमेस्टर I (एक)

प्राचीन काव्य (आदिकाल एवं निर्गुण भक्तिकाव्य)

Paper Code- HIN 4.5 DCC 12

1. Contact Hour/week-06 — लिखित मूल्यांकन : 120
2. Contact Hour/semester-90 — आंतरिक मूल्यांकन : 30
3. Credits Assigned-06 — पूर्णांक : 150

पाठ्यक्रम के उद्देश्य : इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी को भारतीय साहित्यिक परपंरा वैदिक से लेकर तमिल तक के नैरंतर्य में हिन्दी साहित्य के आदिकाल एवं भक्तिकाल के साथ–साथ निर्गुण भक्तिकाव्य का अध्ययन करवाना है जिससे विद्यार्थी को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओ का बोध हो सके और वह भारतीय भाषाओं की एकात्मता को हृदयंगम कर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान कर सके। उसके हृदयस्थ सात्विक भावों को जागृत किया जा सके।

परिणाम : इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी की साहित्यिक अवधारणाओं सम्बन्धी समझ एवं बोधगम्यता बढ़ेगी। औपनिवेशिक दृष्टि से मुक्त होकर वह राष्ट्रीय सांस्कृतिक दृष्टि से साहित्य को समझ सकेगा। वह वैदिककाल से लेकर भक्तिकाल के निर्गुण कवियों के काव्य, भाषा एवं प्रतीकों से परिचित होकर उनकी व्यापक भावसम्पदा से तादात्म्य स्थापित करते हुए हृदय की मुक्तावस्था को प्राप्त होगा। उसके ज्ञान का संवेदनात्मक पक्ष मजबूत होगा।

इकाई – 1

– भारतीय साहित्य परम्परा : वैदिक साहित्य, प्राकृत, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं तमिल साहित्य का संक्षिप्त परिचय।

– साहित्य का इतिहास दर्शन, हिन्दी साहित्येतिहास की लेखन परम्परा, हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन की समस्याएँ।

इकाई– 2

– **आदिकाल** : नामकरण, परिस्थितियाँ, सीमांकन, प्रमुख कवि एवं काव्य रचनाएँ, प्रवृत्तियाँ, उपलब्धियाँ।

– **भक्तिकाल :** परिस्थितियाँ, दार्शनिक आधार, वर्गीकरण, प्रवृत्तियाँ, भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप।

इकाई – 3

– **संतकाव्य** : पृष्ठभूमि, प्रमुख संतकवि एवं रचनाएँ, वैशिष्ट्य, काव्य प्रवृत्तियाँ।

– **प्रेमाख्यान** : उद्गम स्रोत एवं पूर्व परम्परा, प्रमुख कवि एवं रचनाएँ, वैशिष्ट्य प्रवृत्तियाँ।

इकाई – 4

(i) पृथ्वीराज रासउ, सम्पादकः प्रो.माताप्रसाद गुप्त

पद्मावती समय –

मनहु कला ससिभान, कला सोलह सो बन्निय
कुट्टिल केश, सुदेश, पौहप रचियत पिक्क सद
सोधि जुगति कौ कंत कियो तब चित्त चहौं दिस
प्रिय प्रथिराज नरेस, जोग लिषि कग्गर दिन्नौ।

उहै घटी उहै पलनी उहै दिन वैर उहै सजि।

सुनि गज्जनै आवाज, चढ्यो सहाबदीन बर

बज्जिय घोर निसांन, रांन चौहान चहौं दिसि।

निकट नगर जब जान, जाय वर बिंद उभय भय।

भई जु आनि अवाज, आप साहाबदीन सुर।

ना को हार नह जित्त, रहेइ न रहहि सूरवर।

(ii) ढोला मारू रा दूहा– संपादकः नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यकरण पारीक, रामसिंह

मरूधर परिचयः–

देस विरंगउ ढोलणा दुखी हुया ईहाँ आई

करहा देस सुहामणउ जे मूँ सासरवाड़ि।

करहा लंब–कराड़िया, बे–बे अंगुल कन्न।

बाळऊं, बाबा देसड़उ, पाँणी जिहाँ कुवाँह

बाळऊं, बाबा देसड़उ, पाँणी सन्दी ताति

बाबा, म देइस मारुवाँ, सूधा एवाळाँह

बाबा म देइस मारुवाँ, वर कूँआरि रहेसि

मारु, थाँकइ देसड़इ, एक न भाजइ रिड़्ड

जिण भुई पन्नग पीयणा, कयर–कँटाळा रूँख

पहिरण–ओढण कंबळा, साठे पुरिसे नीर

(iii) भनई विद्यापति– संपादक : कृष्णमोहन झा

जय जय संकर जय त्रिपुरारि

नन्दक नन्दन कदम्बक तरु–तर,

देख देख राधा रूप अपार

आज पेखल नन्द किसोर

सजनी कान्ह कें कहब बुझाइ

पथ–गति पेखलि मएँ राधा

सैसव जौवन दुहु मिलि गेल

अनुखन माधब माधब सुमरइते

(iv) अमीर खुसरोः— संपादकः भोलानाथ तिवारी

दोहेः—

अपनी छवि बनाइ के

आ साजन मोरे नयनन में

खुसरो रैन, सुहाग की

गोरी सोवे सेज पर

खुसरो दरिया प्रेम का

मुकरियाः—

आप हिले और मोहे हिलाए

ऊँची अटारी पलंग बिछायो

लिपट लिपट के वा के सोई

सेज पड़ी मोरे आँखों आए

शोभा सदा बढ़ावन हारा

गीतः—

छाप तिलक सब छीन्हीं रे

जब यार देखा नैन भर

सकल बन फूल रही सरसों

इकाई— 5

(i) कबीर ग्रंथावलीः संपादक श्यामसुन्दर दास।

पदः—

दुलहनीं गावहु मंगलचार

बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये

संतौ भाई आई ग्यान की आंधी रे

मन रे जागत रहिये भाई

पांडे कौन कुमति तोहि लागी

हम न मरैं मरिहैं संसारा

साखियाँः–

हसैं न बोलै उनमनी, चंचल मेल्ह्या मारि

सतगुर सांचा सूरिवां, तातैं लोहिं लुहार

कबीर निरभै रांम जपि जब लग दीवै बाति

जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस

कबीर प्रेम न चाखिया, चखि न लीया साव

रात्यूं रूंनी बिरहनीं ज्यूँ वच्चां कूं कुंज

विरहनि ऊभी पंथ सिरि पंथी बूझै धाइ

सब रग तंत रबाब तन, विरह बजावै नित्त

आंखड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारी

प्यंजर प्रेम प्रकासिया, अंतरि भया उजास

मन लागा उनमन सों, उनमन मनहि बिलग

सुरति समांणी निरति मैं, निरति रही निरधार

(ii) जायसी – संपादकः रामचन्द्र शुक्ल

सिंघलदीप खण्डः–

सिंघलदीप कथा अब गावौं।

मानसरोदक बरनौं काहा।

पानि भरै आवहिं पनिहारी।

आस–पास बहु अमृत बारी।

पुनि फुलवारि लागि चहुँ पासा।

पुनि आए सिंघल गढ़ पासा,

नव पौरी पर दसवँ दुवारा।

पुनि बाँधे रजबार तुरंगा।

राजसभा पुनि देख बईठी

बरनौं राजमँदिर रनिवासू।

(iii) सुंदर ग्रथांवलीः संपादकः पुरोहित श्री हरिनारायण शर्मा

पलु ही में मरिजात पलु ही में जीवत है

काम जब जागै तब गनत न कोऊं साप

रंक को नचावे अभिलाषा धन पाइवे की

जोग करै जाग करै बेद विधि त्याग करै

गेह तज्यो अरू नेह तज्यो

बोलिए तो तब जब

पति सूं ही प्रेम होय

सुनत नगारे चोट

(iv) रैदास बानीः संपादकः डॉ. शुकदेव सिंह

पदः—

भाई रे भरम—भगति सूं जानि

अब कैसे छूटै राम रट लागी

आजु दिवस लेऊं बलिहारा

कान्हा हो जग जीवन मोरा

राम मैं पूजा कहां चढ़ांऊ

माधो! संगति सरनि तुम्हारी

रथ को चतुर चलावन हारो

जो तुम तोरौ राम मैनही तोरौं

पांडे! हरी विचि अंतर डाढ़ा

संदर्भ ग्रंथ –

1. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास : डॉ. नगेन्द्र

2. भारतीय साहित्य : मूलचंद गौतम

3. साहित्य की भारतीय परंपरा : श्रीभगवान सिंह

4. भारतीय साहित्य : रामछबीला त्रिपाठी

5. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

6. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र

7. हिन्दी साहित्य की भूमिकाः आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

8. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह

9. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास : डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

10. रासो विमर्श : डॉ. माताप्रसाद गुप्त

11. आदिकालीन साहित्य : डॉ. हरीश

12. संत काव्य : परशुराम चतुर्वेदी

13. भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य : शिवकुमार मिश्र

14. उत्तरी भारत की संत परंपरा : परशुराम चतुर्वेदी

15. संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता : रवीन्द्र कुमार सिंह

16. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय : डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल

17. मध्ययुगीन प्रेमाख्यान : डॉ. श्याममनोहर पाण्डेय

18. हिंदी सूफी काव्य की भूमिका : रामपूजन तिवारी

19. कबीर : विजयेन्द्र स्नातक

20. कबीर : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

21. सूफी मतः कन्हैया सिंह

22. जायसी : विजयदेव नारायण साही

23. जायसी ग्रथांवली : सम्पादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

24. विद्यापति : डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित

25. अमीर खुसरो का हिन्दी काव्य : गोपीचंद नारंग

26. हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि : द्वारकाप्रसाद सक्सेना

---4.5AECT21	General English or Hindi	AEC	2	0	0			50	50	36
HIN. 4.5 DCCT 22	**मध्यकालीन काव्य (सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकाल)**	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36

AECC Course 1
Semester II
हिन्दी भाषा, व्याकरण एवं संप्रेषण

Contact Hour/week-02
Contact Hour/semester-30
Credits Assigned-02
Paper Code- HINDI 4.5 AECT 21

उद्देश्य (**Objective**):— इस पाठ्यक्रम का उद्देदश्य छात्र में भाषिक दक्षता और शुद्धता सबंधी ज्ञान का सघन संचार करना है, जिससे दैनन्दिन जीवन में भाषा व्यवहार के जरिये वह अपनी अद्धितीयता को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर सके।

परिणाम (**Out Come**):— पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी को भाषा के जन्म, प्रकृति, लक्षण, वैशिष्टय, प्रकार आदि का बोध होगा। उसके भाषा व्यवहार में शुद्धता आएगी। सम्प्रेषण बढ़ेगा, रोजगार, लेखन, कार्यालय कार्यों में गति व प्रभाव का विस्तार होगा। वह विभिन्न प्रकार की पत्र लेखन शैलियों एवं निबंध लेखन में प्रवीण होगा। संक्षेपण एवं पल्लवन से भाषा में लाघव, संश्लेषण एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।

इकाई I

भाषा से तात्पर्य, भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप।
हिंदी भाषा की विशेषताएँ, क्रिया, विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय संबंधी।
हिंदी की वर्ण व्यवस्था, शब्द भण्डार।

इकाई II

संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय।

इकाई III

वाक्य रचना, वाक्य शुद्धि, शब्द शुद्धि, समानार्थक शब्द, समश्रुत भिन्नार्थक शब्द, विलोम शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ ।

इकाई IV

पत्र लेखन : शासकीय पत्र, अर्द्धशासकीय पत्र, आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, व्यावसायिक पत्र
प्रारूप : निविदा, विज्ञप्ति, अधिसूचना, परिपत्र।

इकाई V

संक्षेपण, पल्लवन, निबंध।

सहायक पुस्तकें:—

1. हिन्दी व्याकरण : कामताप्रसाद गुरू
2. मानक हिंदी का स्वरूप : भोलानाथ तिवारी

3. संक्षेपण और पल्लवन : कैलाशचंद्र भाटिया/तुमन सिंह

4. पत्र व्यवहार निर्देशिका : भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ

5. राजकाज में हिन्दी : हरदेव बाहरी

6. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण एवं रचना : हरदेव बाहरी

पाठ्यक्रम की संरचना : बी.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर II

---4.5AECT21	General English or Hindi	AEC	2	0	0			100		36
HIN. 4.5 DCCT 22	**मध्यकालीन काव्य (सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकाल)**	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36

पाठ्यक्रम कोड : 4.5 DCCT 22

पाठ्यक्रम का प्रकार : सेमेस्टर II का अनुशासन विशिष्ट कोर कोर्स I

पाठ्यक्रम का शीर्षक : **मध्यकालीन काव्य (सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकाल)**

पाठ्यक्रम का स्तर : NHEQF Lrj 4-5/5/5-5

पाठ्यक्रम का क्रेडिट : 6

पाठ्यक्रम का वितरण : व्याख्यान 5, ट्यूटोरियल 1

सेमेस्टर II (दो)

मध्यकालीन काव्य (सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकाल)

Paper Code- HIN 4.5 DCCT 22

1. Contact Hour/week-06 — लिखित मूल्यांकन : 120
2. Contact Hour/semester-90 — आंतरिक मूल्यांकन : 30
3. Credits Assigned-06 — पूर्णांक : 150

उद्देश्य -

– विद्यार्थी को हिंदी साहित्य की सगुण भक्ति काव्य एवं रीतिकाव्य परंपरा से परिचय करवाना एवं प्रमुख कवियों के सरस काव्यांशों के पठन–पाठन से मानव मूल्यों एवं अपनी परंपरा के प्रति जिज्ञासा एवं समर्पण भाव के लिए प्रेरित करना।

– उत्तर मध्यकालीन परिवेश में हिन्दी कवियों के रचनाकर्म एवं काव्यशास्त्र परम्परा का ज्ञान करवाना, जिससे छात्र रीतिकाल की काव्य की विविध धाराओं एवं रचनाओं को सम्यक् रूप से समझ सके।

परिणाम :-

– सगुण भक्ति काव्य के अध्ययनोपंरात छात्र में श्रद्धा, विश्वास, समर्पण, परोपकार, करूणा, पारिवारिक–सामाजिक सौहार्द, मर्यादा, कर्मशीलता आदि गुणों का समुचित विकास होगा। तुलसीदास, सूरदास, मीरांबाई एवं रसखान आदि के सरस काव्यांशों के अध्ययन से आलोचनात्मक विवेक एवं विश्लेषण क्षमता के साथ छात्र में संवेदनशीलता का विस्तार होगा एवं साहित्य की गहरी समझ विकसित होगी।

– छात्र रीतिकालीन परिस्थितियों का विश्लेषण कर रीति काव्य से तादात्म्य स्थापित कर सकेगा। रस, अलंकार, छंद एवं काव्य के सैद्धान्तिक परिचय से उसके साहित्यिक ज्ञान को ठोस आधार प्राप्त होगा। बिहारी, भूषण, घनानंद एवं गिरिधर कविराय आदि के काव्य के अनुशीलन से शृंगार, नीति, भक्ति एवं वीरत्व की सनातन धाराओं के प्रति समर्पण भाव एवं कलाबोध विकसित होगा।

इकाई – 1

– सगुण भक्ति काव्य : पृष्ठभूमि, प्रतिष्ठापक आचार्य, सगुण–निर्गुण साम्य–वैषम्य, वैशिष्ट्य

– रामभक्ति काव्य : पृष्ठभूमि, कवि एवं प्रमुख रचनाएँ, प्रवृत्तियाँ, रामचरितमानस का महत्त्व।

– कृष्ण भक्ति काव्य : पृष्ठभूमि, कवि एवं प्रमुख रचनाएँ, पुष्टिमार्ग अष्टछाप, काव्यप्रवृत्तियाँ

इकाई – 2

– **काव्यशास्त्र** – **काव्य :** अर्थ, परिभाषा, हेतु, प्रयोजन, गुण, दोष, शब्दशक्ति, नायक–नायिका भेद

– **रस :** अर्थ, महत्त्व, रसावयव, प्रकार एवं उदाहरण

– **छन्द :** छन्द से तात्पर्य, भेद, प्रमुख छन्द, दोहा, चौपाई, कुण्डलिया, कवित्त, गीतिका, हरिगीतिका, रोला, उल्लाला, सवैया, द्रुत विलम्बित

– **अलंकार** – अर्थ, महत्त्व, प्रमुख अलंकार, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रांतिमान, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति

इकाई – 3

– **रीतिकाल :** पृष्ठभूमि, नामकरण, प्रवर्तक कवि,प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ, प्रमुख काव्य धाराएँ, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त, प्रवृत्तियाँ, साम्य–वैषम्य

इकाई – 4

(i) विनय पत्रिका : तुलसीदास, सपांदकः वियोगी हरि।

पदः–

राम जपु, राम जपु, राम जपु, बावरे
ऐसी मूढ़ता या मन की
अस कछु समुझि परत रघुराया
माधव! मोह फांस क्यों टूटे
केशव, कहि न जाइ का कहिये
जौ निज मन परिहरै बिकारा
ऐसो को उदार जग माहीं
कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो
मन पछितैहै अवसर बीते
मैं तोहि अब जान्यो संसार

(ii) भ्रमरगीत सार, सम्पादक : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

पदः–

ऊधो अंखियां अति अनुरागी

आयो घोस बड़ो व्यापारी

ऊधो मन नाही दस–बीस

निर्गुण कौन देस को वासी

हमारे हरि हारिल की लकरी

उर में माखन चोर अड़े

मधुकर श्याम हमारे चोर

ऊधो भली करी ब्रज आए

बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं

लखियत कालिन्दीं अति कारी

(iii) मीरां पदावली : सम्पादक : शम्भुसिंह मनोहर

पदः–

नैना निपट बंकट छबि अटके

माई म्हां गोविन्द गुण गास्यां

राणाजी थे जहर दियौ म्है जाणी

मीरां मगन भई हरि के गुण गाय

जोगिया जी निसदिन जोऊं बाट

हरि बिन कूँण गती

सखी म्हारी नींद नसानी हों

मनरे परसि हरि के चरण।

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई

(iv) रसखान रचनावली : सम्पादक : विद्यानिवास मिश्र, सत्यदेव मिश्र

पदः–

मानुस हौं तो वही रसखान

या लकुटी अरु कामरिया पर

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं

खेलत फाग सुहाग भरी

कान्ह भये बस बाँसुरी के

काह कहू सजनी संग की

प्रेम पगे जु रँगे रँग साँवरे

आवत हैं बन ते मनमोहन

इकाई –5

(i) बिहारी रत्नाकरः संपादकः जगन्नाथ दास रत्नाकर

दोहेः–

मेरी भव बाधा हरो

सोहत ओढ़े पीत पट

अजौं तर्‌योना ही रह्‌यो

तो पर वारौ उरबसी

नेह न नैननि को कछू,

या अनुरागी चित की

लिखन बैठि जाकी सबी,

दृग उरझत टूटत कुटुम,

रनित भृंग घंटावली,

कब को टेरत दीन रट,

स्वारथु सुकृतु न श्रम वृथा,

कहत, नटत, रीझत, खिझत

नहिं परागु नहिं मधुर मधु,

मंगल बिन्दु सुरंगु,

तंत्री नाद कबित्त–रस,

कनक–कनक ते सौ गुनी

नर की अरु नलनीर की,

पत्रा हौं तिथि पाइयै

(ii) भूषण ग्रंथावलीः संपादकः विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

पद :–

शिवाजी का शौर्य वर्णन

देखत ऊँचाई उघरत पाघ, सुधी राह
पूरब के, उत्तर के, प्रबल पछाँह हू के
साजि चतुरंग सेन अंग में उमंग धार,
बेद राखे विदित, पुरान राखे सार युत,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,
सबन के ऊपर ही ठाड़ो रहिबे के जोग

छत्रसाल का प्रताप वर्णन

भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी सी,
चाक चक चमू के अचाकचक चहुँ ओर,
रैया राव चम्पत्ति को चढ़ो छत्रसाल सिंह
राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो,

(iii) घनानंद कवित्त : संपादकः विश्वनाथप्रसाद मिश्र एवं सुजानहित से

पद :–

रूपनिधान सुजान सखी जब ते इन नैननि नेकु निहारे,
हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै
तब तौ छवि पीवत जीवत हे, अब सोचन लोचन जात जरे
भए अति निठुर, मिटाय पहिचानि डारी,
कारी कूर कोकिला, कहाँ को बैर काढ़ति री,
वहै मुसक्यानि, वहै मृदु बतरानि, वहै
अति सुधो सनेह को मारग है
रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिये
चोप चाह चावनि चकोर भयो चाहत ही

आंखिन मूंदिवो बात दिखावत,

(iv) गिरिधर कविराय ग्रंथावलीः सपांदकः किशोरीलाल गुप्त

कुण्डलिया

चिन्ता ज्वाल शरीर की, दाह लगै न बुझाय
फूटै घर को यूं भयो, जानत सकल जहान
साईं बैर न कीजिए, गुरू, पंडित, कवि, यार
बैरी, बंधुवा, बानियां, ज्वारी, चोर, लबार
साईं समय न चूकिए, यथाशक्ति सम्मान
दौलत पाय न कीजिए, सपने हूं अभिमान
पानी बाढ़ौ नाव में, घर में बाढ़ौ दाम
गुण के गाहक सहस नर, बिनु गुण लहै न कोय
बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय
बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ

सहायक पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
3. लोकवादी तुलसीदासः विश्वनाथ त्रिपाठी
4. तुलसी काव्य मीमांसाः उदयभानु सिंह
5. सूरदास – ब्रजेश्वर वर्मा
6. सूर की काव्यकला– डॉ. मनमोहन गौतम
7. सूर का भ्रमरगीत – डॉ. शंकरदेव अवतरे
8. सूर सौरभ – नन्दकिशोर आचार्य
9. मीरा मंदाकिनी – नरोत्तम दास स्वामी
10. मीरां का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
11. पचरंग चोला पहन सखी री– माधव हाड़ा
12. रसखान ग्रंथावली – आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र

13. रसखानः जीवन और कृतित्व – देवेन्द्रप्रताप उपाध्याय

14. बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथप्रसाद मिश्र

15. बिहारी का नया मूल्यांकन– बच्चन सिंह

16. भूषण ग्रंथावलीः संपादक– विश्वनाथप्रसाद मिश्र

17. हिंदी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य – गुरूदेव प्रसाद वर्मा

18 रीतिकाव्य की भूमिका– डॉ. नगेन्द्र

19. रीतिकाव्य– नन्दकिशोर नवल

20. घनानंद का काव्य– रामदेव शुक्ल

21. स्वच्छंद काव्यधारा और घनानंद– मनोहरलाल गौड़

22. अलंकार पारिजात– नरोत्तम दास स्वामी

23. काव्यशास्त्र– भगीरथ मिश्र

पाठ्यक्रम की संरचना : बी.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर III

---5SDCT31	Elementary Computer	SDC	2	0	0		-	50	50	36
5 SDCT 32	आधुनिक काव्य	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36

पाठ्यक्रम कोड : 5 SDCT 32

पाठ्यक्रम का प्रकार : सेमेस्टर III का अनुशासन विशिष्ट कोर कोर्स I

पाठ्यक्रम का शीर्षक : **आधुनिक काव्य**

पाठ्यक्रम का स्तर : NHEQF Lrj 4-5/5/5-5

पाठ्यक्रम का क्रेडिट : 6

पाठ्यक्रम का वितरण : व्याख्यान 5, टयूटोरियल 1

समस्टर III (तृतीय)

आधुनिक काव्य

5 SDCT 32

1. Contact Hour/week-06 — लिखित मूल्यांकन : 120
2. Contact Hour/semester-90 — आंतरिक मूल्यांकन : 30
3. Credits Assigned-06 — पूर्णांक : 150

उद्देश्य -

- विद्यार्थी का हिंदी साहित्य की आधुनिक काव्य परंपरा से परिचय बढ़ाना एवं प्रमुख कवियों के सरस काव्यांशों के पठन–पाठन से प्रसूत मानवीय मूल्यों एवं अपनी परंपरा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं जिज्ञासा भाव के लिए प्रेरित करना।

- आधुनिक काल के प्रमुख हिन्दी कवियों के रचनाकर्म एवं काव्यशास्त्रीय परम्परा का ज्ञान करवाना, जिससे छात्र आधुनिक काव्य की विविध धाराओं एवं रचनाओं को सम्यक् रूप से समझ सके।

परिणाम -

- आधुनिक काव्य के अध्ययनोपरांत छात्र में विचार, वैज्ञानिकता, प्रगतिशीलता और मानवीय मूल्यों के साथ संवेदनात्मक अन्वेषण के गुणों का समुचित विकास होगा। भारतेन्दु से लेकर समकालीन कवि, काव्य परम्परा के सरस काव्यांशों के अध्ययन से आलोचनात्मक विवेक एवं विश्लेषण क्षमता के साथ छात्र में संवेदनशीलता का विस्तार होगा एवं आधुनिक साहित्य की गहरी समझ विकसित होगी।

- छात्र आधुनिक परिस्थितियों का विश्लेषण कर आधुनिक काव्य के माध्यम से समकाल के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकेगा। रस, अलंकार, छंद एवं काव्य के सैद्धान्तिक परिचय से उसके साहित्यिक ज्ञान को ठोस आधार प्राप्त होगा।

इकाई– 1

- आधुनिक कविता : भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, नई कविता, समकालीन कविता।
- काव्यरूप, बिम्ब, प्रतीक, रस का स्वरूप, निष्पत्ति एवं साधारणीकरण।
- प्रमुख विमर्श : स्त्री, दलित, दिव्यांग

इकाई – 2

- रश्मिरथी : रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन

इकाई – 3

– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : चूरण अमल वेद का भारी, निज भाषा उन्नति अहे।

– मैथिलीशरण गुप्त : कैकेयी परिताप, सखि वे मुझसे कहकर जाते, दोनों ओर प्रेम पलता है।

– अयोध्यासिंह उपाध्याय : प्रिय प्रवास : दिवस का अवसान, दुखिया के आँसू, एक बूँद।

– सोहनलाल द्विवेदी : रे मन, खादी गीत, वन्दना।

– श्यामनारायण पाण्डे : हल्दीघाटी, (दूसरा सर्ग)

इकाई –4

– जयशंकर प्रसाद : पे'ोला की प्रतिध्वनि, बीती विभावरी, प्रलय की छाया।

– सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला : कौन तुम शुभ्र–किरण वसना ?(गीतिका), जुही की कली (परिमल), संध्या सुन्दरा (अपरा)

– सुमित्रानन्दन पंत : मौन निमंत्रण (पल्लव) एक तारा, नौका विहार (गुंजन)

– महादेवी वर्मा : जो तुम आ जाते एक बार (नीहार), तुम मुझमें प्रिय फिर क्या परिचय (नीरजा), मैं नीर भरी दुःख की बदली (यामा)

– सुभद्राकुमारी चौहान : जीवन फूल, कोयल, उल्लास, इसका रोना

इकाई –5

– अज्ञेय : नदी के द्वीप, कलगी बाजरे की ।

– नरेश मेहता : माँ, वृक्षत्व, किरण धेनुएँ।

– नागार्जुन : प्रेत का बयान, यह दन्तुरित मुस्कान

– भवानीप्रसाद मिश्र : गीत फरोश, कहीं नहीं बचे।

– ओम पुरोहित *कागद* : पूछती है बेकळू, तपस्वी रूंख, क्यों भटकती है, हरा कर देगी, बरसो जल

सन्दर्भ ग्रंथ –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चनसिंह
4. हिन्दी के प्रतिनिधि आधुनिक कवि – द्वारकाप्रसाद सक्सेना
5. आधुनिक हिन्दी काव्यशिल्प – डॉ. मोहन अवस्थी
6. कविता के नये प्रतिमान – डॉ. नामवर सिंह
7. आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियाँ– डॉ. नामवर सिंह
8. जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता – प्रभाकर श्रोत्रिय
9. सुमित्रानन्दन पंत – डॉ. नगेन्द्र
10. निराला की काव्य साधना – रामविलास शर्मा
11. महादेवी का नया मूल्यांकन – डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
12. महादेवी : दूधनाथ सिंह
13. अज्ञेय की काव्यतितीर्षा – नन्दकिशोर आचार्य
14. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह
15. छायावाद की प्रासंगिकता – रमेशचन्द्र शाह
16. नया हिन्दी काव्य – डॉ. शिवकुमार मिश्र
17. नयी कविता – डॉ. देवराज
18. हिंदी कविता आधुनिक और समकालीन – डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ
19. आधुनिक हिन्दी कविता – हरदयाल
20. अलंकार पारिजात – नरोत्तमदास स्वामी
21. भारतीय काव्यशास्त्र – बलदेवप्रसाद उपाध्याय
22. राजस्थान का आधुनिक हिन्दी साहित्य – संयुक्त संपादन, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

पाठ्यक्रम की संरचना : बी.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर IV

---5VACT41	Indian Knowledge System	VAC	2	0	0	2	50	-	50	36
5 VACT 42	उपन्यास साहित्य	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36

सेमेस्टर IV (चार)

उपन्यास साहित्य

HIN 5 VACT 42

Contact Hour/week - 06 लिखित : 120

Contact Hour/semester - 90 आंतरिकः 30

Credits Assigned - 06 कुल : 150

उद्देश्य -

– विद्यार्थी को हिंदी साहित्य की उपन्यास साहित्य के इतिहास एवं परंपरा से परिचय करवाना एवं प्रमुख उपन्यासकारों के पठन–पाठन से अस्तित्व एवं जीवन के प्रति जागरूकता एवं सह–सम्बन्ध विकसित करना।

– आधुनिक काल के प्रमुख हिन्दी उपन्यासकारों के रचनाकर्म एवं विधा के सैद्धान्तिक ज्ञान का बोध करवाना, जिससे छात्र आधुनिक उपन्यासकार की रचना प्रक्रिया के साथ उपन्यास के मर्म को सम्यक् रूप से समझ सके।

परिणाम -

– उपन्यासों के अध्ययनोपंरात छात्र में आधुनिक काल से लेकर समकालीन उपन्यास परम्परा के प्रमुख पड़ावों के अध्ययन से आलोचनात्मक विवेक एवं विश्लेषण क्षमता के साथ छात्र में संवेदनशीलता का विस्तार होगा एवं साहित्य की गहरी समझ विकसित होगी।

– छात्र आधुनिक जीवन की जटिल परिस्थितियों का विश्लेषण कर उपन्यासों के माध्यम से समकालीन जीवन के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकेगा। मानवीय सम्बन्धों की परस्पर समस्यात्मकता के नैतिक अन्तर्द्वन्द्वों का अवबोध प्राप्त कर सकेगा।

इकाई – 1

1. उपन्यास का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, तत्त्व एव उपन्यास का षिल्प।
2. हिन्दी उपन्यास उद्भव एवं विकास तथा सोपान।
3. प्रमुख हिन्दी उपन्यासकारों का सामान्य परिचय।

इकाई – 2

* रंगभूमि : प्रेमचंद

इकाई – 3

* त्यागपत्र : जैनेन्द्र, सेतु प्रकाषन

इकाई – 4

* अनामदास का पोथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाषन पेपरबैक संस्करण

इकाई–5

* महाभोज : मन्नू भण्डारी, राधाकृष्ण प्रकाषन पेपरबैक संस्करण

संदर्भ ग्रंथ :

1. उपन्यास एवं हिन्दी आलोचना – शंभुनाथ मिश्र
2. उपन्यास : स्वरूप और संवेदना – राजेन्द्र यादव
3. हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा – डॉ.रामदरष मिश्र
4. उपन्यास : स्थिति और गति – चंद्रकांत म. बांदिवडेकर
5. उपन्यास और लोकजीवन – रैल्फ फॉक्स (अनुवादक : नरोत्तम नागर)
6. उपन्यास का षिल्प – गोपाल राय
7. हिन्दी उपन्यास – डॉ.प्रियदर्षिनी
8. मानववाद और साहित्य, आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवत्ता – नवलकिषोर

पाठ्यक्रम की संरचना : बी.ए. (हिन्दी)

सेमेस्टर V

--5.5SDCT51	Communication Skills	SDC	2	0	0	2	50	-	50	36
HIN 5.5 DCCT 52	**नाटक एवं कथेतर साहित्य**	DCC	5	1	0	6	30	120	150	36

पाठ्यक्रम कोड : 5.5 DCCT 52

पाठ्यक्रम का प्रकार : सेमेस्टर V का अनुशासन विशिष्ट कोर कोर्स I

पाठ्यक्रम का शीर्षक : **नाटक एवं कथेतर साहित्य**

पाठ्यक्रम का स्तर : NHEQF Lrj 4-5/5/5-5

पाठ्यक्रम का क्रेडिट : 6

पाठ्यक्रम का वितरण : व्याख्यान 5, टयूटोरियल 1

सेमेस्टर V (पाँच)

नाटक एवं कथेतर साहित्य

HIN 5.5 DCCT 52

1. Contact Hour/week-06	लिखित मूल्यांकन : 120
2. Contact Hour/semester-90	आंतरिक मूल्यांकन : 30
3. Credits Assigned-06	पूर्णांक : 150

Paper Code- HIN 4.5 DCC 12-A

उद्देश्य -

– विद्यार्थी को आधुनिक हिंदी साााहित्य के नाटक एवं कथेतर साहित्य की परंपरा से परिचय करवाना एवं प्रतिनिधि नाटककारों एवं कथेतर लेखकों द्वारा रचित विविध विधाओं के पठन–पाठन के माध्यम से समकालीन जीवन की विलुप्त होती सरसता से उन्हें सम्यक रूप से जोड़ना एवं सह–सम्बन्ध विकसित करना।

– आधुनिक काल के प्रमुख हिन्दी नाटककारों एवं कथेतर लेखकों के रचनाकर्म एवं विविध विधाओं के सैद्धान्तिक ज्ञान का बोध करवाना, जिससे छात्र साहित्य की विविध विधाओं से न केवल परिचित ही हो सके बल्कि विविध रचनाओं से गुजरते हुए अपना संबंध स्थापित कर सके।

परिणाम -

– नाटक और कथेतर विधाओं के अध्ययनोपरंरात छात्र में जीवन और संवेदना के प्रति अन्वेषक भाव का उदय एवं तत्संबंधी गुणों का समुचित विकास होगा। आधुनिक काल से लेकर समकालीन नाटक एवं कथेतर साहित्य की यात्रा के प्रमुख पड़ावों के अध्ययन से आलोचनात्मकविवेक एवं विश्लेषण क्षमता के साथ छात्र में संवेदनशीलता का विस्तार होगा एवं साहित्य की गहरी समझ विकसित होगी।

– छात्र आधुनिक जीवन की जटिल परिस्थितियों का विश्लेषण कर नाटक एवं कथेतर साहित्य के माध्यम से समकालीन जीवन के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकेगा।

इकाई – 1

हिन्दी नाटक एवं एकांकी : अर्थ, तत्त्व, उद्भव एवं विकास, प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ

इकाई – 2

अन्धेर नगरी : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

कबीरा खड़ा बाजार में : भीष्म साहनी

इकाई –3

एक तोला अफीम की कीमत	: रामकुमार वर्मा
साहब को जुकाम है	: उपेन्द्रनाथ अश्क
मकड़ी का जाला	: जगदीश चन्द्र माथुर
आवाज का नीलाम	: धर्मवीर भारती

इकाई – 4

आत्मकथा	:	सत्य के साथ मेरे प्रयोग महात्मा गाँधी के निम्न अंश – सभ्य पोशाक में, बलवान से भिड़ंत, आत्मिक शिक्षा, शांति निकेतन, खादी का जन्म
यात्रावृतान्त	:	अमृतलाल वेगड़ के निम्न अंश – छिलगाँव से अमरकंटक, अमरकंटक से डिण्डोरी से महाराजपुर, महाराजपुर से ग्वारीघाट
रेखाचित्र	:	महादेवी वर्मा : घीसा
पत्र–लेखन	:	भैया के नाम पाती : रामविलास शर्मा

इकाई – 5

मन की दृढ़ता	:	बालकृष्ण भट्ट
श्रद्धा और भक्ति	:	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
नाखून क्यों बढ़ते हैं	:	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
तमाल के झरोखे से	:	विद्यानिवास मिश्र

संदर्भ –

1. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा
2. रंग परम्परा – नेमीचन्द जैन
3. भारतीय नाट्य परम्परा – नेमीचन्द जैन
4. आधुनिक भारतीय रंग परिदृश्य – संपादक जयदेव तनेजा
5. भारतीय नाटक और रंगमंच – जगदीश चतुर्वेदी
6. साहित्य सहचर – हजारीप्रसाद द्विवेद्वी
7. गद्य की सत्ता – रामस्वरूप चतुर्वेदी
8. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य – डॉ. हरदयाल
9. हिन्दी का कथेतर साहित्य – संपादक माधव हाड़ा
10. हिन्दी का कथेतर गद्य : परम्परा और प्रयोग – दयानिधि मिश्र
11. निबंध, सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ. हरिहरनाथ द्विवेद्वी
12. हिन्दी निबन्ध : गणपतिचन्द्र गुप्त
13. हिन्दी के प्रतिनिधि निबंधकार – द्वारकाप्रसाद सक्सेना
14. नया साहित्य नये प्रश्न – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
15. रचना प्रक्रिया – ओम अवस्थी

सेमेस्टर VI (छह)

कहानी साहित्य

HIN 5.5 DCCT 62

HIN 5.5 DCCT 62	कहानी साहित्य	DCC	5	1		30	120	150		36

Contact Hour/week - 06 लिखित : 120

Contact Hour/semester - 90 आंतरिकः 30

Credits Assigned - 06 कुल : 150

उद्देश्य -

– विद्यार्थी को हिंदी साााहित्य की कहानी साहित्य के इतिहास एवं परंपरा से परिचय करवाना एवं प्रमुख कहानीकारों के पठन–पाठन से अस्तित्व एवं जीवन के प्रति जागरूकता एवं सह–सम्बन्ध विकसित करना।

– आधुनिक काल के प्रमुख हिन्दी कहानीकारों के रचनाकर्म एवं विधा के सैद्धान्तिक ज्ञान का बोध करवाना, जिससे छात्र आधुनिक कहानीकार की रचना प्रक्रिया के साथ कहानी के मर्म को सम्यक् रूप से समझ सके।

परिणाम -

– कहानियों के अध्ययनोपरांत छात्र में आधुनिक काल से लेकर समकालीन कथा परम्परा के प्रमुख पड़ावों के अध्ययन से आलोचनात्मक विवेक एवं विश्लेषण क्षमता के साथ छात्र में संवेदनशीलता का विस्तार होगा एवं साहित्य की गहरी समझ विकसित होगी।

– छात्र आधुनिक जीवन की जटिल परिस्थितियों का विश्लेषण कर कहानियों के माध्यम से समकालीन जीवन के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकेगा। मानवीय सम्बन्धों की परस्पर समस्यात्मकता के नैतिक अन्तर्द्वन्द्वों का अवबोध प्राप्त कर सकेगा।

इकाई – 1

4. कहानी का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, तत्त्व कहानी का षिल्प।

5. हिन्दी कहानी का उद्‌भव एवं विकास तथा सोपान।

6. प्रमुख हिन्दी कहानीकारों का सामान्य परिचय।

इकाई – 2

* उसने कहा था	:	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
* आकाषदीप	:	जयषंकर प्रसाद
* पाजेब	:	जैनेन्द्र

इकाई – 3

* शरणदाता	:	अज्ञेय
* चीफ की दावत	:	भीष्म साहनी
* गदल	:	रांगेय राघव

इकाई – 4

* अकेली	:	मन्नू भण्डारी
* गलत होता पंचतंत्र	:	राजी सेठ
* जिन्दगी और जोंक	:	अमरकान्त

इकाई–5

* स्नेहबंध	:	मालती जोषी
* फैसला	:	मैत्रेयी पुष्पा
* फुलवा	:	रतनकुमार साँभरिया

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. हिन्दी कहानियों का षिल्प – लक्ष्मीनारायण लाल
3. कहानी : नई कहानी – नामवर सिंह
4. हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेष
5. समकालीन कथा साहित्य की सरहदें – रोहिणी अग्रवाल
6. हिन्दी कहानी वाया आलोचना – सम्पादक नीरज खरे
7. आज की कहानी : विजयमोहन सिंह
8. समकालीन हिन्दी कहानी – पुष्पपाल सिंह

हिन्दी कहानी : रचना प्रक्रिया और स्वरूप – बटरोही